Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

बहुविकल्पी प्रश्न

1. स्थलरूप विकास की किस अवस्था में अधोमुख कटाव प्रमुख होता है?

(अ) तरुणावस्था (ब) प्रौढ़ावस्था
(स) जीर्णावस्था (द) वृद्धावस्था

2. बर्फ पिघलने के बाद एक वक्राकार कटक के रूप में मिलते हैं, कहलाता है-

(अ) स्टैक (ब) एस्कर
(स) भृगु (द) पुलिन

3. निम्नलिखित में से कौन-सी भूआकृति का निर्माण भौम जल की निक्षेप क्रिया द्वारा होता है?

(अ) लेपीस (ब) कन्दरा
(स) स्टैलेक्टाइट (द) धोल रंध्र

4. नदियां डेल्टा का निर्माण किस अवस्था में करती है?

(अ) युवावस्था में (ब) वृद्धावस्था में
(स) प्रोढ़ावस्था में (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

5. निम्नलिखित में से किसका निर्माण तरंगों तथा धाराओं के निक्षेप कार्य द्वारा नहीं होता?

(अ) रोधिका (ब) पुलिन
(स) विसर्प (द) टिब्बे

6. नदी अपने मुहाने पर एक धारा में ना बहकर कई धाराओं में बहती है-

(अ) क्षिप्रिकाएँ (ब) केनियन
(स) विसर्प (द) डेल्टा

7. एक गहरी घाटी जिसकी विशेषता सीढ़ीनुमा खड़े ढाल होते हैं; किस नाम से जानी जाती है?

(अ) गॉर्ज (ब) कैनियन
(स) अंधी घाटी (द) U आकार की घाटी

8. निम्न में से कौन-सी हिमनद से बनने वाली स्थलाकृति नहीं है?

(अ) सर्क (ब) एस्कर
(स) हॉर्न (द) स्टैलेक्टाइट

9. निम्न में से नदियों से बनने वाली स्थलाकृति नहीं है-

(अ) विसर्प (ब) युवाला
(स) V आकार की घाटी (द) जलप्रपात

मिशन ज्ञान
पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

10. निम्नलिखित में से कौन-सी भूआकृति का निर्माण नदी की अपरदन क्रिया द्वारा होता है?

(अ) डेल्टा (ब) जलोढ़ पंख

(स) V आकार की घाटी (द) तटबंध

रिक्त स्थान

11. नदी की युवावस्था में जल विभाजक अत्यधिक विस्तृत व _____ होते है।

12. जल प्रतापों के तल में निर्मित विशाल व गहरे कुण्ड _____ कहलाते हैं।

सत्य/असत्य

13. छोटे से मध्यम आकार के भूखण्ड भू–आकृति कहलाते है।

14. नदी की वृद्धावस्था में छोटी सहायक नदियाँ कम होती है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. अपवाहन गर्त किसे कहते हैं?

16. नदियाँ वृद्धावस्था में कौन-कौन सी स्थलाकृतियों का निर्माण करती हैं?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. चट्टानों में अध:कर्तित विसर्प और मैदानी भागों में जलोढ़ के सामान्य विसर्प क्या बताते हैं?

18. पवन अपरदन से बनी स्थलाकृतियों के बारे में व्याख्या करें।

निबंधात्मक प्रश्न

19. चूना चट्टानें आर्द्र व शुष्क जलवायु में भिन्न व्यवहार करती हैं, क्यों? चूना प्रदेशों में प्रमुख व मुख्य भू-आकृतिक प्रक्रिया कौन-सी है और इसके क्या परिणाम हैं?

20. आर्द्र व शुष्क जलवायु प्रदेशों में प्रवाहित जल ही सबसे महत्वपूर्ण भू-आकृतिक कारक है। विस्तार से वर्णन करें।

HOTS

21. नदी वेदिकाओं की उत्पत्ति के क्या कारण हैं?

मिशन ज्ञान
पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

1. **(अ)**
स्थलरूप विकास की तरुणावस्था में अधोमुख कटाव प्रमुख होता है।

2. **(ब)**
हिमानी के पिघलने पर उसके जलोढ़ निक्षेपों, विशेषकर बजरी, रेत, कंकड-पत्थर आदि के निक्षेपण से लम्बे, संकरे, लहरदार एवं किनारे तीव्र ढाल वाले टीलो को एस्कर कहते हैं। कभी-कभी कुछ अन्तर में एस्कर की मोटाई अधिक हो जाती हैं।

3. **(स)**
स्टैलेक्टाइट : भूमिगत जल के फलस्वरूप कंदराओ का निर्माण होता है। इन कंदराओ में जल के टपकने से कंदरा की छत के सहारे चूने का जमाव होता है।

4. **(ब)**
नदियां डेल्टा का निर्माण वृद्धावस्था में करती है।

5. **(स)**
विसर्प का निर्माण तरंगों तथा धाराओं के निक्षेप कार्य द्वारा नहीं होता। नदी विसर्प एक प्रमुख प्रवाही जल(नदी) कृत अपरदनात्मक स्थलरुप हैं। मैदानी क्षेत्रों में नदी की धारा दाएं-बाएं, होते हुए प्रवाहित होती है और विसर्प बनाती है।

6. **(द)**
डेल्टा नदी के मुहाने पर उसके द्वारा बहाकर लाए गए अवसादों के निक्षेपण से बनी त्रिभुजाकार आकृति होती हैं। डेल्टा का नामकरणकर्ता 'हेरोटोडस' को माना जाता हैं।

7. **(ब)** कैनियन

8. **(द)**
स्टैलेक्टाइट : भूमिगत जल के फलस्वरूप कंदराओ का निर्माण होता है। इन कंदराओ में जल के टपकने से कंदरा की छत के सहारे चुने का जमाव हो जाता है। जिसे स्टैलेक्टाइट कहते है।

9. **(ब)**
युवाला : चूनापत्थर (कार्स्ट) प्रदेश में पाया जाने वाला डोलाइन से बड़ा एक लंबा गर्त जो सामान्य रूप से अनेक डोलाइनों के सम्मिलन द्वारा निर्मित होता है।

10. **(स)**
V आकार की घाटी वी आकार की घाटी का नामकरण अंग्रेजी वर्णमाला के "V" अक्षर के आधार पर किया गया हैं। सर्वप्रथम नदी निम्नवर्ती कटाव द्वारा अपनी तली को गहरा करती हैं। इससे तंग व संकरी "V" आकृति की घाटी विकसित होती हैं जिसके पार्श्व तीव्र ढाल वाले या उत्तल होते हैं।

11. समतल

12. अवनमित कुण्ड

13. सत्य

14. सत्य

15. पवनों के एक ही दिशा में स्थायी प्रवाह से चट्टानों के अपक्षयजनित पदार्थ या असंगठित मिट्टी का अपवाहन होता है। इस प्रक्रिया में उथले गर्त बनते हैं, जिन्हें अपवाहन गर्त कहते है। वर्षा ऋतु में जल एकत्र होने से ये क्षेत्र झीलों में परिवर्तित हो जाते है। मरुस्थलों में इस प्रकार की झीलें मरुद्यानों के केद्रों की भूमिका निभाती है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
VIDEO COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

16. नदियाँ वृद्धावस्था में निम्नलिखित स्थलाकृतियों का निर्माण करती हैं :-

1. गुंफित नदी
2. डेल्टा
3. ज्वारनदमुख।

17. नदी विकास की प्रथम अवस्था में प्रारंभिक मंद ढाल पर विसर्प लूप विकसित होते हैं तथा ये लूप चट्टानों में गहराई तक होते हैं जो प्रायः नदी अपरदन एवं भूतल के धीमे व लगातार उत्थान की वजह से बनते हैं।

कालांतर में ये गहरे तथा विस्तृत हो जाते हैं तथा कठोर चट्टानी भागों में गहरे गॉर्ज व कैनियन के रूप में पाए जाते हैं। नदियाँ का विकास इन प्राचीन धरातलों के परिचायक के द्वारा हुआ हैं।

बाढ़ व डेल्टाई मैदानों पर लूप जैसे चैनल प्रारूप विकसित होते हैं, जिन्हें विसर्प कहा जाता है। नदी विसर्प के निर्मित होने का एक कारण तटों पर जलोढ़ का अनियमित व असंगठित जमाव है, जिससे जल का दबाव नदी पार्श्वों की ओर बढ़ना है। प्रायः बड़ी नदियों के विसर्प में उत्तल किनारों पर सक्रिय निक्षेपण होते हैं तथा अवतल किनारों पर अधोमुखी कटाव होते हैं।

18. **पवन अपरदन :-** इस प्रकार का अपरदन मरूस्थलीय प्रदरों में देखने को मिलता है मरूस्थलीय प्रदेशो में पवन मृदा के महीन कणों व बालू को पास के कृषि भूमियो में बिछाते रहते हैं। पवन केवल महीन मलबे का ही अपवाहन कर सकते हैं और बृहत अपरदन मुख्यतः परत बाढ़ या वृष्टि धोवन से ही संपन्न होता है।

पवन यांन्त्रिक प्रक्रिया द्वारा विभिन्न प्रकार के स्थलाकृतियों का निर्माण करता है। पवन अपरदन से निम्न स्थलाकृतियों का निर्माण होता है-

i. **पेडीमेंट –** मरुस्थलों में भूदृश्य का विकास मुख्यतः पेडीमेंट का निर्माण व उसका ही विकसित रूप है। पर्वतों के पद पर मलबे रहित अथवा मलबे सहित मंद ढाल वाले चट्टानी तल पेडीमेंट कहलाते हैं। पेडीमेंट का निर्माण पर्वतीय अग्रभाग के अपरदन-मुख्यतः सरिता के क्षैतिज अपरदन व चादर बाढ़ दोनों के संयुक्त अपरदन-से होता है।

ii. **छत्रक –** मरुस्थलों में अधिकतर चट्टानें पवन अपवाहन व अपघर्षण द्वारा शीघ्रता से कट जाती हैं और कुछ प्रतिरोधी चट्टानों के घिसे हुए अवशेष, जिनके आधार पतले व ऊपरी भाग विस्तृत और गोल, टोपी या छत्रक (Mushroom) के आकार के होते हैं, छत्रक के नाम से जाने जाते हैं।

iii. **वात गर्त –** पवन द्वारा अपरदन से उत्पन्न उथले गर्तों को अपवाहन गर्त अथवा वात गर्त कहा जाता है।

iv. **मरूकुट्टिम –** अपवाहन महीन पदार्थों को हटा देता है, जिससे भूपृष्ठ पर बड़ी-बड़ी गुटिकाएँ बन जाती हैं। इस प्रकार की अवशिष्ट गुटिकाओं वाले परत को मरूकुट्टिम कहते हैं।

v. **ज्यूगेन –** मरुस्थलीय भागों में जब कठोर चट्टानों के ऊपर कोमल संरचना वाली चट्टानें क्षैतिज रूप में बिछी होती हैं तब कोमल चट्टानों को हवा शीघ्रता से काट देती है, जिससे उनके बीच में पतली घाटियों का निर्माण हो जाता है। कठोर चट्टानी भाग कोमल चट्टानों पर ओपी की भाँति अवस्थित रहता है।

19. चूना चट्टानें आर्द्र व शुष्क जलवायु में भिन्न व्यवहार करती हैं क्योंकि चूना पत्थर एक घुलनशील पदार्थ है, इसलिए चूना पत्थर आर्द्र जलवायु में कई स्थलाकृतियों का निर्माण करता है जबकि शुष्क प्रदेशों में इसका कार्य आर्द्र प्रदेशों की अपेक्षा कम होता है। चूना पत्थर एक घुलनशील पदार्थ होने की वजह से चट्टान पर इसके रासायनिक अपक्षय का प्रभाव सबसे ज़्यादा होता है, लेकिन शुष्क जलवायु वाले प्रदेशों में यह अपक्षय के लिए रुकावट करता है। इसकी मुख्य वजह यह है कि लाइमस्टोन की रचना में समानता होती है तथा बदलाव के कारण चट्टान में फैलाव तथा संकुचन नहीं होता है, जिस वजह से चट्टान का कटाव अधिक मात्रा में नहीं हो पाता है।

चूना-पत्थर या डोलोमाइट चट्टानों के क्षेत्र में भौमजल द्वारा घुलन क्रिया तथा उसकी निक्षेपण प्रक्रिया से बने ऐसे स्थलरूपों को कार्स्ट स्थलाकृति का नाम दिया गया है। अपरदनात्मक तथा निक्षेपणात्मक दोनों प्रकार के स्थलरूप कार्स्ट स्थलाकृतियों की विशेषताएँ हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

अपरदित स्थलरूप कुंड, लेपीज, घोलरंध्र तथा चूना-पत्थर चबूतरे हैं। निक्षेपित स्थलरूप कंदराओं के भीतर ही निर्मित होते हैं। चूनायुक्त चट्टानों के अधिकतर भाग गतों व खाइयों के हवाले हो जाते हैं और पूरे क्षेत्र में अधिक अनियमित, पतले व नुकीले कटक आदि रह जाते हैं, जिन्हें लेपीज कहते हैं। इन कटकों या लेपीज का निर्माण चट्टानों की संधियों में भिन्न घुलन क्रियाओं द्वारा होता है। कभी-कभी लेपीज के विस्तृत क्षेत्र समतल चूनायुक्त चबूतरों में परिवर्तित हो जाते हैं।

20. आर्द्र व शुष्क जलवायु प्रदेशों में प्रवाहित जल ही सबसे महत्वपूर्ण भू-आकृतिक कारक है क्योंकि आर्द्र प्रदेशों में जहाँ अत्यधिक वर्षा होती है, प्रवाहित जल सबसे आवश्यक भू-आकृतिक कारक है जो धरातल के निम्नीकरण के लिए उत्तरदायी है। प्रवाहित जल को दो तत्व में विभाजित किया जाता हैं। एक धरातल पर परत के रूप में फैला हुआ प्रवाह हैं; दूसरा रैखिक प्रवाह है जो घाटियों में नदियों, सरिताओं के रूप में बहता है। प्रवाहित जल द्वारा निर्मित अधिकतर अपरदित स्थलरूप ढाल प्रवणता के अनुरूप बहती हुई नदियों की आक्रमण युवावस्था से संबंधित हैं। कालांतर में तेज ढाल लगातार अपरदन के कारण मंद ढ़ाल में परिवर्तित हो जाते हैं और परिणामस्वरूप नदियों का वेग कम हो जाता है, जिससे निक्षेपण आरंभ होता है। तेज ढाल से बहती हुई सरिताएँ भी कुछ निक्षेपित भू-आकृतियाँ बनाती हैं, लेकिन ये नदियों के मध्यम तथा धीमे ढाल पर बने आकारों की अपेक्षा बहुत कम होते हैं। प्रवाहित जल की ढाल जितना मंद होगा, उतना ही अधिक निक्षेपण होगा। बहुत ज्यादा अपरदन की वजह से नदी तल समतल हो जाए, तो अधोमुखी कटाव कम हो जाता है तथा तटों का पार्श्व अपरदन बढ़ जाता है तथा इसके कारण पहाड़ियाँ और घाटियाँ समतल मैदानों में बदल जाती हैं। शुष्क क्षेत्रों में ज़्यादा स्थलाकृतियों का निर्माण बृहत् क्षरण तथा प्रवाहित जल की चादर बाढ़ से होता है। यद्यपि मरुस्थलों में वर्षा बहुत कम होती है, लेकिन यह अल्प समय में मूसलाधार वर्षा के रूप में होती है। मरुस्थलीय चट्टानें अत्यधिक वनस्पतिविहीन होने के कारण तथा दैनिक तापांतर के कारण यांत्रिक एवं रासायनिक अपक्षय से अधिक प्रवाहित होती हैं। मरुस्थलीय भागों में भू-आकृतिकयों का निर्माण सिर्फ पवनों से नहीं बल्कि प्रवाहित जल से भी होता है।

21. निक्षेपण की प्रधानता के कारण नदी घाटी के इस भाग में विभिन्न भू-आकृतियों की रचना होती है। जलोढ़ पंख, विसर्पण, छाड़न झील, तटबांध, वेदिका, बाढ़ के मैदान एवं नदी की चौड़ी घाटी इन भागों के प्रमुख भू-आकार हैं।

नदी वेदिकाओं की उत्पति के कारण–

i. जल प्रवाह का कम होना।
ii. जलवायु परिवर्तन के कारण जलीय क्षेत्र में परिवर्तन।
iii. विवर्तनिक कारणों से भू-उत्थान।
iv. अगर नदियाँ तट के निकट होती हैं तो समुद्रतल में बदलाव।
v. नदी द्वारा लम्बवत कटाव के कारण गहरी एवं संकरी घाटी का निर्माण होता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES